C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangot

श्रीहरिः

सावधान :—नियत सोलह आना अच्छी रख
अति उत्तम व्यवहार करना
कम खर्च की आदत डालना

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

—:❀:—

१. हे प्रभु—आपकी शक्ति से ही हो रहा
आपके लिए ही हो रहा है ।
आपका है ही सब कुछ ।
२. परमात्मा मय है ही सब कुछ

श्रीगीताजी १८।६६, १२।४, ५।२२, ९।२
९।२८, ६।३०, ६।४७, १८।
(एक सत्संगी भाई)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीरामजी *

गजलगीता

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

प्रकाशक—गोविन्दभवन-कार्यालय—गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० १९८४ से २०३६ तक २३,०५,०००
सं० २०३७ छप्पनवाँ संस्करण १,००,०००
सं० २०४१ सत्तावनवाँ संस्करण ५०,०००

कुल २४,५५,०००
चौबीस लाख पचपन हजार

मूल्य पाँच पैसे

मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

गजलगीता

प्रथमहिं गुरुको शीश नवाऊँ ।
हरिचरणोंमें ध्यान लगाऊँ ॥ १ ॥
गजल सुनाऊँ अद्भुत यार ।
धारणसे हो बेड़ा पार ॥ २ ॥
अर्जुन कहै सुनो भगवाना ।
अपने रूप बताये नाना ॥ ३ ॥
उनका मैं कछु भेद न जाना ।
किरपा कर फिर कहो सुजाना ॥ ४ ॥
जो कोई तुमको नित ध्यावे ।
भक्तिभावसे चित्त लगावे ॥ ५ ॥

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

रात दिवस तुमरे गुण गावे ।
तुमसे दूजा मन नहिं भावे ॥ ६ ॥
तुमरा नाम जपे दिन रात ।
और करै नहिं दूजी बात ॥ ७ ॥
दूजा निराकारको ध्यावे ।
अक्षर अलख अनादि बतावे ॥ ८ ॥
दोनों ध्यान लगानेवाला ।
उनमें कुण उत्तम नँदलाला ॥ ९ ॥
अर्जुनसे बोले भगवान ।
सुन प्यारे कछु देकर ध्यान ॥१०॥
मेरा नाम जपै जपवावे ।
नेत्रोंमें प्रेमाश्रू छावे ॥११॥
मुझ बिनु और कछू नहिं चावे ।
रात दिवस मेरा गुण गावे ॥१२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर मेरा नामोच्चार ।
उठै रोम तन बारम्बार ॥१३॥
जिनका क्षण टूटै नहिं तार ।
उनकी श्रद्धा अटल अपार ॥१४॥
मुझमें जुड़कर ध्यान लगावे ।
ध्यान समय विह्वल हो जावे ॥१५॥
कंठ रुके बोला नहिं जावे ।
मन बुधि मेरे माँहि समावे ॥१६॥
लज्जा भय रु बिसारे मान ।
अपना रहे न तनका ज्ञान ॥१७॥
ऐसे जो मन ध्यान लगावे ।
सो योगिनमें श्रेष्ठ कहावे ॥१८॥
जो कोइ ध्यावे निर्गुण रूप ।
पूर्ण ब्रह्म अरु अचल अनूप ॥१९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निराकार सब वेद बतावे ।
मन बुद्धी जहँ थाह न पावे ॥२०॥
जिसका कबहुँ न होवे नाश ।
व्यापक सबमें ज्यों आकाश ॥२१॥
अटल अनादी आनन्दघन ।
जाने बिरला योगीजन ॥२२॥
ऐसा करे निरन्तर ध्यान ।
सबको समझे एक समान ॥२३॥
मन इन्द्रिय अपने वश राखे ।
विषयनके सुख कबहुँ न चाखे ॥२४॥
सब जीवोंके हितमें रत ।
ऐसा उनका सच्चा मत ॥२५॥
वह भी मेरे ही को पाते ।
निश्चय परमा गतिको जाते ॥२६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फल दोनोंका एक समान ।
किन्तु कठिन है निर्गुण ध्यान ॥२७॥
जबतक है मनमें अभिमान ।
तबतक होना मुश्किल ज्ञान ॥२८॥
जिनका है निर्गुणमें प्रेम ।
उनका दुर्घट साधन नेम ॥२९॥
मन टिकनेको नहीं अधार ।
इससे साधन कठिन अपार ॥३०॥
सगुण ब्रह्मका सुगम उपाय ।
सो मैं तुझको दिया बताय ॥३१॥
यज्ञ दानादि कर्म अपारा ।
मेरे अर्पण कर कर सारा ॥३२॥
अटल लगावे मेरा ध्यान ।
समझे मुझको प्राण समान ॥३३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब दुनियाँसे तोड़े प्रीत ।
मुझको समझे अपना मीत ॥३४॥
प्रेममग्न हो अती अपार ।
समझे यह संसार असार ॥३५॥
जिसका मन नित मुझमें यार ।
उनसे करता मैं अति प्यार ॥३६॥
केवट बनकर नाव चलाऊँ ।
भवसागरके पार लगाऊँ ॥३७॥
यह है सबसे उत्तम ज्ञान ।
इससे तूँ कर मेरा ध्यान ॥३८॥
फिर होवेगा मोहिं समान ।
यह कहना मम सच्चा जान ॥३९॥
जो चाले इसके अनुसार ।
वह भी हो भवसागर पार ॥४०॥

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

श्रीहरिः

भगवान् का नाम लेकर प्राणीमात्र के लिए प्रार्थना।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

हे प्रभु! आप के बल से ही आप का नाम अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड की तरफ से ही लिया गया है। इसलिए कि अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का आप के चरणों में श्रद्धाप्रेम, भजन, निष्काम-भाव, गीतामय जीवन बढ़ता ही जावे और अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का सब समय श्रीगीताजी की चर्चा में ही बीते और कोई हेतु है ही नहीं।

श्रीगीताजी १२।४ २।४०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri